पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-V

Hindi

Specimen copy

Year- 2021-22

Semester- 1

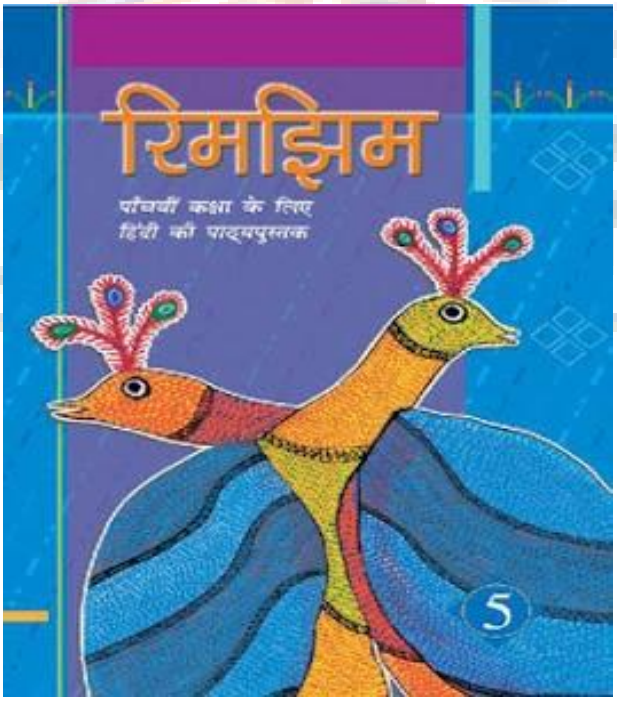

अनुक्रमणिका

क्रम	महीना	पाठ का नाम
अध्याय १	अप्रेल	➢ पाठः१ राख की रस्सी ➢ व्याकरणःसंज्ञा ➢ लेखन विभागःनिबंध ➢ गतिविधिया
अध्याय २	मई	➢ पाठः २ फसलोके त्यौहार ➢ व्याकरणःसर्वनाम ➢ लेखन विभागःपत्र ➢ गतिविधिया

पाठ :१

राख की रस्सी

पाठ का सार : तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसैन गांपो के मंत्री का नाम लोनपोगार था। लोनपोगार अपनी चालाकी और हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध थे। लेकिन उनका बेटा ठीक उनके विपरीत था। वह इतना भोला था कि लोनपोगार काफी चिंतित हो उठे। वे चाहते थे कि उनका बेटा उनकी तरह होशियार हो। एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सौ भेड़ें देकर शहर जाने को कहा। साथ में उन्होंने हिदायत दी कि वह इन्हें मारे या बेचे नहीं बल्कि इन्हें सौ जौ के बोरों के साथ वापस लाए।

बेटा शहर पहुँच गया। वह बहुत चिंतित था क्योंकि उसके पास सौ बोरे जौ खरीदने के लिए रुपये नहीं थे। अचानक उसके सामने एक लड़की आकर खड़ी हो गई। जब उसने उसकी चिंता का कारण पूछा तो उसने अपना हाल उससे कह सुनाय या। लडकी झेशियार थी। उसने भेड़ों के बाल उतारकर बाजार में बेच दिए और उससे मिले रुपयों से सौ बोरे जौ खरीद कर उसे वापस घर भेज दिया। बेटे को लगा कि पिताजी बहुत खुश होंगे लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

दूसरे दिन लोनपोगार ने अपने बेटे को फिर शहर भेज दिया उन्हीं भेड़ों के साथ। उन्होंने बेटे से कहा कि भेड़ों के बाल उतारकर बेचना उन्हें पसंद नहीं आया। अतः वह दोबारा ऐसा काम नहीं करेगा। लेकिन भेड़ों के साथ सौ बोरे जौ अवश्य लाएगा। क बार फिर निराश लोनपोगार का बेटा शहर पहुँचा। वह लड़की उसे फिर मिली। उसने फिर अपनी समस्या उसे सुनाई। इस बार लड़की ने भेड़ों के सींग काटकर उन्हें बाजार में बेच दिया और उनसे मिले रुपयों से सौ बोरे जौ खरीद उसे घर वापस भेज दिया।

बेटे ने खुशी में अपने पिता से सारी कहानी कह दिया। सुनकर लोनपोगार बोले, "उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दे।" उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश सुनाया। लड़की एक

शर्त पर रस्सी बनाने को तैयार थी। शर्त था कि उसके पिता उस रस्सी को गले में पहनें। लोनपोगार ने सोचा ऐसी रस्सी बनाना ही संभव नहीं है। इसलिए लड़की की शर्त स्वीकार कर ली।

अगले दिन लड़की ने नौ हाथ की रस्सी लेकर उसे पत्थर की सिल पर रखकर जला दिया। रस्सी के जलने के बाद उसी के आकार की राख बच गई। लड़की उसे सिल समेत लोनपोगार के पास ले गई और उसे पहनने को कहा। लोनपोगार राख की रस्सी देखकर दंग रह गए। लड़की की समझदारी और सूझबूझ से वे काफी प्रभावित हुए और उससे अपने बेटे की शादी करा दिए।

कठिन शब्दः

- हाजिरजवाबी
- होशियार
- जौ
- हल
- मुश्किल
- तरीका
- प्रस्ताव
- रस्सी
- राख
- शादी
- संदेश
- मंत्री

शब्दार्थः

- हाजिरजवाबी : तपाक से जवाब देना
- मशहूर-प्रसिद्ध
- चैन-शांति से
- रवाना किया-भेजा
- आपबीती-अपने ऊपर घटित
- यकीन-विश्वास
- मंजूर-स्वीकार
- चकित रह गए-हैरान हुए
- मुश्किल-कठिन
- आँवाए-बिताए, बबदि किए
- धूमधाम-खूब अच्छी तरह से
- **जौ-गेहूँकीतरह का एक खाद्य पदार्थ**
- **हल-समस्या**
- **प्रस्ताव-सुझाव,पेशकश**
- **सम्मुख-सामने**

निम्नलिखित प्रश्नों के वैकलिपक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

१ःसौनगसौन कहाँ का शासक था?
उत्तरः (क) **तिब्बत का** (ख) मगध का
(ग) कलिग का (घ) मिस्र का

२ःलोनपो ने अपने पुत्र को शहर भेजते समय कितनी भेडे दी थी?
उत्तरः (क) दो सौ **(ख) सौ**
(ग) पाँच सौ (घ) पचास

३ःलोनपो ने अपने पुत्र को शहर से कौन सा अन्न लाने के लिए कहा?
उत्तरः (क) चावल (ख) गेहूँ
(ग) मक्का **(घ) जौ**

४:लडकी लोनपो के पास राख की रस्सी कैसे के गई थी?

उत्तरः **(क) सिल समेत** (ख) चूर्ण बनाकर

(ग) मुट्ठी मे भरकर (घ) इनमे से कोई नही

५:लोनपो ने लडकी के सम्मुख क्या प्रस्ताव रखा?

उत्तरः (क) नौकरी का (ख) मंत्री बनने का

(ग) अपने पुत्र की शादी का (घ) इनमे से कोई नही

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१:लोनपो ने सौ जौ के बोरों को लेने के लिए अपने बेटे को कहाँ के लिए रवाना किया?

उत्तर-लोनपो ने सौ जौ के बोरों को लेने के लिए अपने बेटे को शहर के लिए रवाना किया।

२:लोनपो के पुत्र को किसे मारने या बेचने की आज्ञा नहीं थी?

उत्तर-लोनपो के पुत्र को भेडों को मारने या बेचने की आज्ञा नहीं थी।

३:भेडों के बाल बेचना किसे पसंद नहीं आया?

उत्तर-भेडों के बाल बेचना लोनपो को पसंद नहीं आया।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१:लोनपो कौन थे? वह क्यो प्रसिद्ध थे?

उत्तरः लोनपो तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगव सेन गांपो के मंत्री थे।वे अपनी चालाकी और हाजिर जवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे।

२:लोनपो किस के कारण चिंतित थे और क्यों?

उत्तर-:लोनपो अपने बेटे के कारण चिंतित थे क्योंकि वह बहुत भोला था।

३:दूसरी बार शहर जाने पर लोनपो के पुत्र ने बैठने लिए पुरानी जगह को ही क्यों चुना?

उत्तरः क्योंकि उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए वहाँ जरुर आएगी।

४:पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपोगार ने क्या किया?

उत्तरः पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपोगार उठकर कमरे से बाहर चले गए।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।-

१:पहली बार शहर जा कर लोनपो का पुत्र क्यों दुखी था? तथा उसकी मदद किसने की?

उत्तरः लोनपो का बेटा शहर पहुँचा। मगर सौ बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे।कोई हल उसकी समझ में हीनहीं आ रहा था।वह बहुत दुखी था तथा उसकी मदद एक लड़की ने की।

२:लोनपो किसके कारण चिंतित थे और क्यों?

उत्तरः लोनपो अपने बेटे के कारण चिंतित थे क्योंकि वह बहुत भोला था।

३:दूसरो बार शहर जाने पर लोनपो के पुत्र ने बैठने के लिए पुरानी जगह को ही क्यों चुना?

उत्तरः दूसरी बार शहर जाने पर लोनपो के पुत्र ने बैठने के लिए पुरानी जगह को ही चुना क्योंकि उसे यकीन था की वह लड़की उसकी मदद के लिए जरुर आएगी।

४:पहलीबारजौकेसौ बोरे लाए देखकरलोनपोगार ने क्या किया?

उत्तरः पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपोगार उठकर कमरे से बाहर चले गए।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१:लोनपो का पुत्र नदी तट पर बैठकर समस्या पर विचार कर रहा था। (गलत)
२: लोनपो का पुत्र दोबारा अनय भेडो को लेकर शहर गया था। (गलत)
३:लोनपो के पुत्र और लडकी की दुसरी भेड़ सडक के किनारे हुई थी। (सही)
४:लडकी ने लोनपो को राख की रस्सी पहनने के लिए कहा था। (सही)
५:लडकी की शादी सौनगसैर के पुत्र से हो गई। (गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१:लोनपो का पुत्र बहुत **सीधा-सादा** था।
२:लोनपो के पुत्र के पास **सौ** बोरे जौ खरीदने के लिए रुपये नही थे।
३:**लडकी** ने भेडो के बाल उतारे।
४:लोनपो ने सोचा ऐसी **रस्सी** बनाना ही असंभव है।

व्याकरण विभाग

संज्ञा

संज्ञा-किसी व्यकित ,प्राणी ,वस्तु ,स्थान ,भाव आदि के नाम को <u>संज्ञा</u> कहते है।

* नीचे कुछ संज्ञा शब्द दिए गए हैं

व्यकितयों के नाम	पशु-पक्षियों के नाम	वस्तुओं के नाम	स्थानों के नाम
बित्तो	खरगोश	बोतल	गाँव
किसान	घोड़ा	किताब	मैदान
पिता	कोयल	करेला	सड़क
धोबी	शेर	जूता	खेत
डाक्टँर	गौरैया	शीशा	नदी
नाई	बिल्ली	छतरी	बगीचा

संज्ञा के तीन भेद होते है।

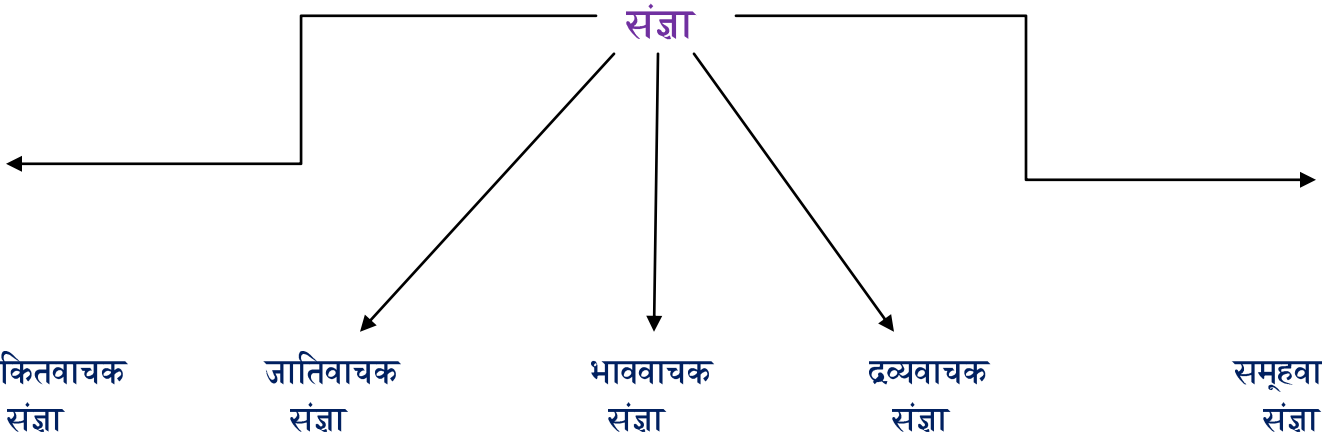

- **व्यकितवाचक संज्ञा**-किसी विशेष व्यक्ति ,वस्तु और स्थान के नाम की जानकारी देने वाले शब्द व्यकितवाचक संज्ञा कहलाते है।

जैसे- डॉ. राजेंन्द प्रसाद भारत के गौरव थे।
गंगा एक पवित्र नदी है।

- **जातिवाचक संज्ञा**-जिन संज्ञा शब्दों से किसी जाति विशेष अथवा वर्ग की जानकारी प्राप्त हो उन्हे जातिवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे-बाग में फूल खिले है।
शेर पिंजडे में है।

- **भाववाचक संज्ञा**-जिन संज्ञा शब्दों से गुण, दोष, दशा, अवस्था ,भाव आदि की जानकारी मिले ,उन्हे भाववाचक संज्ञा कहते है।

जैसे-सुधीर को सरदी लग गई है।
सज्जनता एक महान गुण है।

- **द्रव्यवाचक संज्ञा**- जिन संज्ञा शब्दो मे किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है, उन्हे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे-दो किलो चने की दाल तौल दीजिए।
ज्यादा पानी मत बहाओ।
चाँदी का दाम सोने से कम होता है।
पीतल के बर्तन बहुत महँगे होते है।

- **समूहचाचक संज्ञा**- जिन संज्ञा शब्दो से एक ही जाति के व्यकितो या वस्तुओ के समूह का बोध होता है उन्हे समूहवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे-रास्ते मे बहुत भीड़ थी।
अतिथि को फूलो का गुच्छा भेंट किया गया।
मेरे परिवार मे छह सदस्य है।
गायो का झुड़ अचानक दौडने लगा।

स्वाध्याय :निम्नलिखित वाक्यों नें संज्ञा और उनके प्रकार लिखिए।

१-वह कल रात को आया था।	जातिवाचक संज्ञा
२-हिरन इधर-उधर दौड़ रहे थे।	जातिवाचक संज्ञा
३-हिमालय पर्वत बहुत ऊचाँ है।	व्यक्तिवाचक संज्ञा
४-आज बहुत गरमी है।	भाववाचक संज्ञा
५-हम लोग अमेरिका मे रहते है।	व्यक्तिवाचक संज्ञा
६-सेना आगे बढ़ रही है।	जातिवाचक संज्ञा
७-लक्ष्मीबाई की वीरता जगत प्रसिसदध है।	भाववाचक संज्ञा
८-बीरबल की चतुराई देखकर अकबर बहुत प्रसन्न हुए।	भाववाचक संज्ञा
९-सोने की शुद्धता की परख जौहरी ही कर सकता है।	भाववाचक संज्ञा
१०-मुझे बहुत भूख लगी है।	भाववाचक संज्ञा

लेखन विभाग
अनुशासन

अनुशासन ही सफलता की कुंजी है।हर किसी के जीवन में अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण है। अनुशासन के बिना कोई सुखी जीवन नहीं जी सकता। अनुशासन वह सब कुछ है जो हम सही समय में सही तरीके से करते हैं। यह हमें सही रास्ते पर ले जाता है। जीवन के सभी कार्यों में अनुशासन अत्यधिक मूल्यवान है। हमें हर समय इसका पालन करना है चाहे वो स्कूल, घर, कार्यालय, संस्थान, फैक्टरी, खेल का मैदान, युद्ध का मैदान या दूसरी जगह हों।

ये खुशहाल और शांतिपूर्ण जीवन जीने की सबसे बड़ी जरुरत है। आज के आधुनिक समय में अनुशासन बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इस व्यस्तता भरे समय में यदि हम अनुशासन भरे दिनचर्या का पालन ना करें तो हमारा जीवन अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है - अनु और शासन। अनु का अर्थ है पालन और शासन का मतलब नियम। हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है यह हमें नियमों का पालन करना सिखाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो कि समाज में रहता है और उसमें रहने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है।अनुशासन हमारी सफलता की सीढ़ी है,

जिसके सहारे हम कोई भी मंजिल हासिल कर सकते है। अनुशासन दो प्रकार का होता है - एक वो जो हमें बाहरी समाज से मिलता है और दूसरा वो जो हमारे अंदर खुद से उत्पन्न होता है। हालाँकि कई बार, हमें किसी प्रभावशाली व्यक्ति से अपने स्व-अनुशासन की आदतों में सुधार करने के लिये प्रेरणा की जरुरत होती है।

अनुशासन का महत्त्व समझने के बाद हमें चाहिए कि हम हमेशा अनुशासन में रहें और अपने जीवन में सफल होने के लिए अपने माता-पिता और शिक्षकों के आदेश का पालन करें। हमें सुबह-सुबह बिस्तर से उठना चाहिए और एक गिलास पानी पीना चाहिए और खुद को तरोताजा रखना चाहिए।

दांतों को रोजाना ब्रश करना चाहिए, स्नान करना चाहिए और फिर स्वस्थ नाश्ता करना चाहिए। बिना भोजन ग्रहण किए हमें कभी भी न तो स्कूल जाना चाहिए और न ही किसी अन्य काम में। हमें अपने प्रत्येक कार्य को सही समय पर साफ और स्वच्छ तरीके से करना चाहिए।

अपने जीवन को अनुशासित बनाए रखने के लिए हमें हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। क्योंकि अनुशासन ही सफल जीवन की पहली सीड़ी मानी जाती है। हम अपने जीवन में अनुशासन को अपनाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का पालन कर सकते हैं -

1 - एक संतुलित और नियमित दिनचर्या का पालन करना।

2 - कार्यों को समय पर पूरा करने का हरसंभव प्रयास करना।

3 - व्यर्थ के कार्यों से दूर रहना।

4 - बुरी आदतों और कार्यों से दूरी बनाना।

5 - अपने कार्यों के प्रति पूरी लगन रखना।

प्रवृत्तिः

पाठ :२

फ़सलों के त्योहार

पाठ का सार : जाड़ा का मौसम है। दस दिनों से सूरज नहीं उगा है। हम लोग सूरज के इंतजार में हैं। रजाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही। लेकिन खिचड़ी (मकर संक्रांति) का त्योहार आ गया है। अतः जाड़ा के बावजूद हम सभी नहा-धोकर एक कमरे में इकट्ठा हो गए। दादा, चाचा और पापा ने सफेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है। सामने मचिया पर खादी की सफेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। उनके बाल धुलने के बाद सफेद सेमल की रुई जैसे हो गए हैं। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिसपर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि रखे हुए हैं। दादी ने हम सबसे इन चीजों को बारी-बारी से छूने और प्रणाम करने के लिए कहा। बाद में इन्हें दान दे दिया गया।

खिचड़ी के दिन चूड़ा-दही और खिचड़ी खाने का रिवाज है। किन्तु अप्पी दिदिया को दोनों में से कोई चीज पसंद नहीं है। फिर भी उन्हें दोनों चीजें खानी होंगी क्योंकि आज खिचड़ी का त्योहार है। इस दिन तिल, गुड़ और चीनी के तिलकुट भी खाए जाते हैं जो बड़े स्वादिष्ट लगते हैं।

जनवरी माह के मध्य में भारत के लगभग सभी प्रांतों में फसलों से जुड़ा कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और अपना ढंग नजर आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फसलों के घर में आने की खुशी का इजहार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर संक्रांति या तिल संक्रांति, असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड मे सरहुल, गुजरात में पतंग का पर्व सभी खेती और फसलों से जुड़े त्योहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग-अलग समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल काफी धूमधाम से मनाया जाता है। अलग-अलग जनजातियाँ इसे अलग-अलग समय में मनाती हैं। इस दिन 'साल के पेड़ की पूजा की जाती है। इसी समय से मौसम बहुत खुशनुमा हो जाता है। इसीदिन से वसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा की जाती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फसल में बोया जाता है।

तमिलनाडु में फसलों से जुड़ा त्योहार 'पोंगल' है। इसदिन खरीफ की फसलें चावल, अरहर, मसूर आदि केटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है। इसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकने के लिए धूप में रख देते हैं। जैसे ही दूध में उफान

आता है और दूध-चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो "पोंगला-पोंगल, पोंगला-पोंगल" के स्वर गूंजने लगते हैं।"

कठिन शब्दः

- बोरसी
- चाँपाकल
- सैलाब
- कतार
- प्रांत
- घुघुतियाँ
- खिचड़ी
- फरमाइश
- जश्न
- पकवान

शब्दार्थः

- बोरसी : मिटटी से निर्मित एक प्रकार का बर्तन
- घुघुतिया : कुमाऊ का त्योहार
- अंदाज : तरीका
- चपाँकल : नल
- इकटठे-समूह
- क्तार : लाईन
- सूर्य : सूरज, रवि
- प्रांत : देश
- त्यौहार : पर्व
- कतार : लाइन

निम्नलिखित प्रश्नों के वैकलिपक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

१ : किस स्थान का तिलकुट प्रसिद्र है?

उत्तर : (क) मनेर का (ख) बडहिया का

(ग) गया का (घ) सिलाव का

२ : देशभर मे फसलो से जुडे त्योहार मनाए जाते है?

उत्तर : (क) फरवरी और मार्च **(ख) जनवरी और अप्रेल**

(ग) नवंबर और दिसंबर (घ) जुलाई और सितंबर

३ : सरहुल का जश्न कितने दिनों तक चलता रहता है?

उत्तर : (क) दो दिनो तक (ख) तीन दिनो तक

(ग) पाँच दिनो तक **(घ) चार दिनो तक**

४ : पोंगल बनाते समय मटके के मुँह के ऊपर क्या बाधाँ जाता है?

उत्तर : **(क) साबुत हल्दी** (ख) साबुत अदरक

(ग) गेहूँ की बलियाँ (घ) इनमे से कोई नही

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१ : दादी के बाल कैसे लग रहे थे?

उत्तर : दादी के बाल सफ़ेद रुई जैसे लग रहे थे।

२ : तिलकुट किन चीज़ो से बनाया जाता है?

उत्तर : तिलकुट गुड़ और तिल से बनाया जाता है।

३ : सरहुल में चंदे में कौन-कौन सी चीज़े माँगी जाती हैं?

उत्तर : सरहुल में चंदे में मुर्गा, चावल और मिश्री माँगी जाती हैं।

४ : पोंगल के दिन घरों में कौन-कौन सी फ़सलें काटकर लाई जातीहैं?

उत्तर : पोंगल के दिन घरों में खरीफ़ की फ़सलें, चावल, अरहर आदि काटकर लाई जाती हैं।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१-खिचड़ी के त्योहार के दिन केले के पत्तों पर क्या-क्या रखा गया था?

उत्तर-खिचड़ी क त्योहार के दिन केले के पत्तों पर तिल,गुड़,चावल रखा गया था।

२-सरहुल का साल के वृक्ष से क्या सबंध है?

उत्तर-सरहुल के दिन विशेष रूप से साल के पेड़ की पूजा की जाती है।यही समय है जब साल के पेड़ो में फूल

आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता हैं।

३-पोंगल कैसे मनाया जाता है?

उत्तर-तमिलनाडु में मकर-संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्यौहार "पोंगल"के रूप में मानया जाता है।हर घर में मिटटी का नया मटका लाया जाता है।जिसमें नए चावल,दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते है।जैसे ही दूध में उफ़ान आता है दूध-चावल मटके से बाहर गिरनेलगता है तो "पोंगला-पोंगल,पोंगला-पोंगल"के स्वर सुनाई देते ह।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।-

१-खेती और फ़सलों से जुड़े कौन-कौन से त्योहार किन-किन प्रांतों में मनाए जाते हैं?

उत्तर : केरल मे ओणम ,पंजाब मे लोहडी , तमिलनाडु मे पोंगल ,झारखंड मे सरहुल ,गुजरात मे मकरसंक्रांति असम मे बिहु ,कुमाऊँ मे घुघुतिया और बिहार मे संक्रांति के रूप मे मनाया जाता है।

२-मकर संक्रांति के दिन किस प्रांत में पतंगों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है और क्यों?

उत्तर : मकर संक्रांति के दिन गुजरात में पतंगो को सर्वाधिक महत्व दिया जाता हैं।प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म,जाति या आयु का हो,पतंग उड़ाता है। हज़ारों- लाखो पतंगो से सूर्य भी ढक-सा जाता हैं।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : जनवरी के मध्य मे भारत के लगभग सभी प्रातो मे फसल से जुडे त्योहार मनाए जाते है।
(सही)

२ : सरहुल के अवसर पर कानो मे सरई का फूल पहना जाता है।
(सही)

३ : पोगल बनाने के लिए मटके को छाँह मे रखा जाता है।
(गलत)

४ : गुजरात मे मकर-संक्राति के दिन पंतगो से चाँद ढ़क-सा जाता है।
(गलत)

५ : मकर-संक्राति के दिन पानी मे तिल डालकर स्नान किया जाता है।
(सही)

स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : गुरुजी, विमला दिद्या, आंनद जी व झिलमिल भैया ईटँ के चुल्हे पर खिचडी बनाते है।
२ : आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते है।
३ : पोगल मे नए धान को कूटकर चावल निकाला जाता है।
४ : गुजरात मे पंतगो के बिना मकर-संक्राति का जश्न अधूरा माना जाता है।
५ : घुघुतिया (कुमाऊँ का त्योहार) मे बच्चे माला से पकवान तोडकर पक्षीयो को खिलाते है।

पयार्यवाची शब्द

बादल - मेघ, घन
घोड़ा - अश्व, तुरंग
पक्षी - खग, विहग
घर - मकान, गृह
हाथी - गज, कुंजर
रात - रात्री, निशा
ईश्वर - प्रभु, भगवान
समुद्र - सागर, सिंधु
पहाड़ - पर्वत, गिरि
चंद्रमा - चंद्र, शशि

विलोम शब्द

गुरु × शिष्य
देव × दानव
सजीव निर्जीव
अपना × पराया
हानि ×लाभ
आदि ×अंत
उदय × अस्त
आकाश पाताल
अमृत × विश
ऊँच ×नीच

व्याकरण विभाग

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द को सर्वनाम कहते है।
(मैं, हम, तुम , आप, यह, वह, कोई, कुछ कौन , क्या, जो, सो)

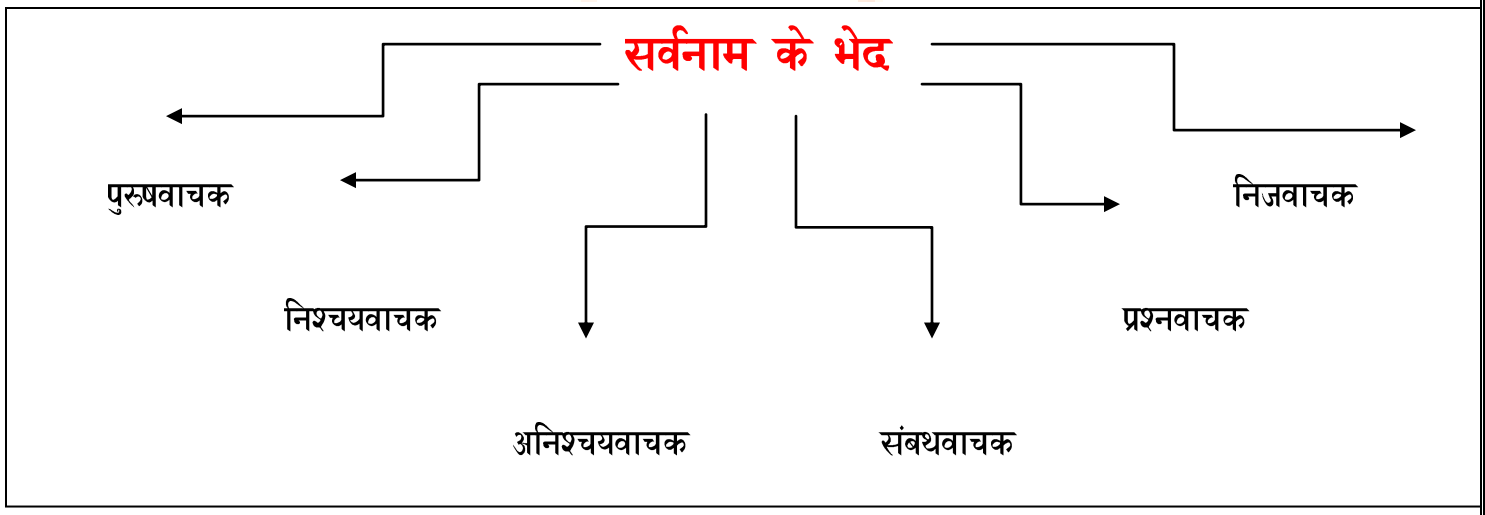

- पुरुषवाचक सर्वनामःबोलने वाले सुनने वाले तथा जिसके विषय में बात होती है, उनके लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम ं पुरुषवाचक सर्वनामकहलाते है।

  उदाहरणः

  - **तुम** कहाँ जा हे हो।
  - **मैं** उसके घर जार हा हूँ

  (क) उत्तम पुरुष : मैं, हम, हमारा, मुझे, मेरा

  (ख) मध्यम पुरुष : तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका

  (ग) अन्य पूरुष : वह, उस, उसका, उन, उनका, उनके

  उदाहरणः

  - यह यंत्र **मैने** बनाया है।
  - बारिश मे **हमारी** पुस्तकें भीग गई।
  - **तुम** इधर बैठो।
  - आरती को **तुमसे** कुछ काम है।
  - **वह** कल नही खेला।
  - **वे** चित्र बना रहे है।

- निश्चयवाचक सर्वनाम :जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यकित ,वस्तु, अथवा घटना की ओर संकेतकरते है, उन्हे निश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

  उदाहरणः

  - **यही** मान्या का घर है
  - **माँइसी** ने मेरी मदद की थी।

- अनिश्चयवाचक सर्वनाम :जो सर्वनाम शब्दो से किसी निश्चित व्यकित ,वस्तु का बोध न हो ,उन्हे अनिश्चयवाचक सर्वनामकहते है।

  उदाहरणः

  - लगता है, माँ बाजार से **कुछ** लाई है।
  - देखो, इस रास्ते से **कोई** आर हा है।

- संबंधवाचक सर्वनामःजो सर्वनाम शब्द वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम के बीच संबंध बतातेहै, उन्हे संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरणः

- उठो बेटा ।जो सोता है , वह खोता है।
- जिसने नीली कमीज पहनी है,उसका नाम कनिष्क है।

- प्रश्नवाचक सर्वनाम : जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हे पंश्नवाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरणः

- वहाँ कौन खड़ा है?
- गिलास किसने तोड़ा?
- घंटी किसने बजाई?
- तुम्हे क्या चाहिए?
- यह घड़ी किसकी है?

- निजवाचक सर्वनाम : जिन सर्वनाम शब्दो का प्रयोग कर्ता के साथ अपनेपन का ज्ञान कराने के लिए किया जाए उन्हे निजवाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरणः

- बेटा, तुम रहने दो,मै स्वयं कर लूँगा।
- माँ, मैं अपने-आप चली जाउगी।

लेखन विभाग

पत्र लेखन

पत्र लिखने का तरीका :

प्रेषक का पता :

दिनांक :

संबोधन :

अभिवादन :

विषय - वस्तु :

प्रेषक का नाम :

पत्र के दो प्रकार होते है।

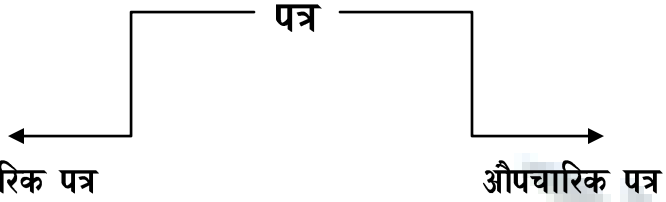

अनौपचारिक पत्र : अनौपचारिक पत्र संबंधियो व मित्रो को लिखे जाते है।

औपचारिक पत्र : औपचारिक पत्र को तीन वर्गो मे बाँटा जाता है।

- प्रार्थना - पत्र
- कार्यालयी - पत्र
- व्यावसायिक - पत्र

औपचारिक पत्र : वन अधिकारी को अपने क्षेत्र मे वृक्षारोपण का सुझाव देते हुए पत्र लिखिए।

ई-२३२, राजापुरी उत्तम नगर

गाँधीनगर

दिनाकः २३ / ५ /२१

सेवा मे,

निदेशक महोदय

वन विभाग

गाँधीनगर सरकार, गाँधीनगर ।

विषय : वृक्षारोपण हेतु सुझाव

महोदय,

मै द्वारका सेक्टर १२ का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र मे कई ऐसे स्थान है,जो खाली पड़े है।खाली जगह समझकर लोग उन स्थानो पर कूड़ा -कचरा फेककर गंदगी फैला रहे है।उन जगहो पर गैरकानूनी गतिविधियो के लिए पंयोग कर रहे है।यहाँ के निवासियो का जीना मुश्किल हो गया है।

हम सब निवासियो का यह सुझाव है कि यदी हम और आप मिलकर इन स्थानो पर वृक्षारोपण कर दे तो ये स्थान भर जाएँगे और वातावरण भी प्रदुषित नही होगा।स्वच्छता और हरियाली के कारण चहल-पहल रहने से असामाजिक तत्व भी गलत कार्य नही कर पाएँगे।लोग शुद हवा व स्वचछ वातावरण मे साँस ले सकेगे।कृपया इस सुझाव को निवेदन मानकर शीघ्र ही दिशा मे कदम उठाएँ।

धन्यवाद

अपना नाम

प्रवृत्तिः अलग-अलग राज्यों के त्योंहार के चित्र चिपकाओ अथवा बनाओ।